

## शास्त्र [Postion]

- ✓ ★ प्रारंभिक से प्रवेशिका तक सभी शब्दों की जानकारी
- ✓ ★ नृत्य के भ्रेद - नृत, नाट्य और नाइट नृत्य की परिभाषा
- ✓ ★ लाख्य तथा तांडव की केवल परिभाषा
- ✓ ★ अभिनय दर्पणानुसार ग्रिवा भ्रेद [ ५ प्रकार ]
- ✓ ★ लोक नृत्य तथा आधुनिक नृत्य की परिभाषा
- ★ जिवनियाँ

१) पं कलिका प्रसाद

२) पं हनुमान प्रसाद

३) पं बिष्णु बिन्दिन प्रसाद

- ★ अभिनय दर्पण के अनुसार नऊ प्रकार के शिरोभ्रेद
- ★ जगपुर तथा लखनऊ धराने की विशेषता
- ★ संयुक्त छस्त मुद्राएँ परिभाषा तथा प्रयोग [ उंजली-शंख ]
- ★ तितीनताल, झपताल, एकताल के पाठ्यक्रम की सभी स्थनाओं को लिपिबद्ध करना
- ★ गतव्याव के प्रसंगों का वर्णन लिखना
- ★ संत कवि सूरदास तथा मीरा का परिचय
- ★ दृष्टीभ्रेद
- ★ नवरस
- ★ आठ शास्त्रीय नृत्य, उनकी विशेषता और जानकारी
- ★ दशावतार
- ★ देव छस्तार्थ

V7A3II

## मध्यमा प्रथम वर्ष

पुर्णकि - 200 , अभूतमः - 70

शास्त्र - 75 , त्यूनतम - 26

क्रियात्मक - १२८, न्यूनतम - ५५

शास्त्र

६) नर्तक के भेद - नृत्य, नाट्य और सूत्र की परिभाषा

क) नृत्यः

लय और संगीत के साथ अंग संचलन करना, पर कोई आवश्यक प्रदर्शन न होना।

भावभिन्न से बहितता जो नटन किया होती है उसे नृत्य कहा जाता है। नृत्य में लय-ताल की ही प्रधानता रहती है। वस्तुतः जब ताल और लय के विभिन्न आकार-प्रकार के अंग-संचलन के द्वारा अ प्रदर्शन किया जाता है, तब उसे नृत्य कहा जाता है।

ख) नाट्यः

किसी भी वस्तु की उसी प्रकार नकल उतारना

जब अभिनेता अपने से पृथक किसी ऐतिहासिक पात्र की चाल-ढाल, वेशभूषा, बोलने का ढंग आदि प्रत्येक अवस्था का अनुकरण या नकल प्रस्तुत करता है, तो उसे नाट्य कहते हैं।

ग) नृत्यः

नाट्य और नृत्य, इन दो कलाओं के मिलन से जिस स्त्रकारी सरी कला का जन्म हुआ है वह सूत्र कही जाती है। यह इस और भावों की अभिव्यंजना से मुक्त होता है। जब मुँह से गाना गाया जाए, हाथों की मुद्राओं में उस गीत के शब्दों का अर्थ बतलाया जाए, और आँखों से उसके आविष्कारों नाट्य और पैरों से ताल के अनुसार ठेका दिया जाए तब नृत्य होता है।

नृत्य की उत्पत्ति चार प्रकार के अभिनय से होती है:-

- \* आंगीक
- \* वाचिक
- \* अहर्मिम
- \* सात्विक

→ सात्विक अभिनय के प्रकार

कम्पन, शोमांचक, मुधी, अशुलाना, स्ताम्भिक होना,  
स्वरखंड होना, पसीना निकलना, विकृत मखाकृती बनाना.

उल्लङ्घन तथा तंतुव तांडव के केवल परिभाषा

→ लास्य

यह जूँगार प्रधान नृत्य है। इसमें अंग संचालन को मलता पूर्ण किया जाता है। इसका संगीत को मल होता है।  
कृष्णा की शसलीला आदि इसमें आती है।  
जरिता और योवक

→ तांडव

तंड औं तांण्डु के नाम पर ताण्डव नृत्य का नाम पड़ा है। इसका अंग संचालन कठोर तथा आवेश पूर्ण होता है। इनमें कठि मुद्राओं द्वारा भी भावों को व्यक्त किया जाता है।  
आनंद, बोझ, आ, काली, कृष्ण, शिव, मौरी

## 4) 4 प्रकार के श्रिवा भोव भोद

श्रिवा मानि गर्द्दन छमारे क्रिया कलापों व अँग-संचालन की मूल है। बिना गर्द्दन घुमाते न तो हम ऊपर देख सकते हैं और न बगल में। अभिनय दर्पन में आचार्य नंदिकेश्वर ने श्रिवा भोद के ४ प्रकार बताए हैं।

→ सुंदरी श्रिवा:

गर्द्दन से सुगमतापूर्ण समान कप से इधर-उधर चलने को सुंदरी श्रिवा कहते हैं।

→ तिरश्चीना श्रिवा:

दोनों पार्श्व में ऊपर की ओर झर्ष की तरह चलती हुई गर्द्दन की को तिरश्चीना श्रिवा कहते हैं।

→ परिवर्तीता श्रिवा:

अर्धचंद्रकार कप से दाहिना-बाएँ चलती हुई गर्द्दन को परिवर्तीता श्रिवा कहते हैं।

→ प्रकम्पिता श्रिवा:

कबूतर के कंठ की तरह कंपते हुए आगे-बाहिर चलती हुई गर्द्दन को प्रकाम्त प्रकम्पिता श्रिवा कहते हैं। इसका प्रयोग घम-तुम बताने, लोक नाट्य में, और धिरे धिरे बड़बडाने, आदि में होता है।

## 5) लोक वृत्त तथा आधुनिक नृत्य की परिभाषा

→ लोक नृत्य

किसी भी क्राष्ट्र के जागृति का प्रतिक है। किसी भावशित्वकिति को उसकी प्राकृतिक अवस्था में प्रस्तुत कर देना ही लोक नृत्य कहलाता है।

→ आधुनिक वृत्त

कला समाज का दर्पण है। जब भी युग कर्खट लेते हैं, उसके साथ साथ कला भी अपना रूप, उसी के अनुसार बदलती जाती है। कला के बहुत कला के नहीं किन्तु उसका संबंध जीवन से भी है। इसी कारण आधुनिक नृत्य कभी भी किसी रूप में बंध करके नहीं छोड़ते। जो उस समय की रुचिजीवन की समस्याएँ होती हैं, उनकी उन्हीं का नृत्य में प्रकट करना ही आधुनिक नृत्यों के अन्तर्गत आता है।

## ६) भगवनियाँ

### \* महाराज बिन्दादीन

- कथ्यक वृत्त्य की लखनऊ धराने की परम्परा में सबसे प्राचीन वृत्त्याचार्य महाराज बिन्दादीन हुए हैं। ये नवाब वाजिद अली शाह के दरबारी नर्तक महाराज ठाकुरप्रसाद जी के बड़े भाई महाराज दुर्गप्रसाद जी के तीन पुत्रों में सबसे बड़े थे। इनका पूरा नाम वृन्दावन प्रसाद था। इनका जन्म १८३४ में तथा १९१८ में हुई थी।
- ये नई-नई परने बड़ी शीघ्रता व सरलता के साथ बना लेते थे तथा इनका भाव प्रदर्शन भी अत्यन्त सुन्दर था। ये अनेक प्रकार के चमत्कार पूर्ण दृश्यों को करने में कुशल थे।
- महाराज बिन्दादीन एक उत्तम कल्पक वाग्येयकार थे। कहा जाता है कि इन्होंने १५०० तुमरियों का निर्भ-निर्माण करके तथा भाव के साथ उनके अंगों की स्थगना करके कथ्यक वृत्त्य को महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया। इनमें से अनेक तुमरिया आज भी गायकों व नर्तकों में प्रचलित हैं।
- वे भगवान कृष्ण के परम भक्त हैं। लखनऊ के मुसलमानी वातावरण तथा वेश्याओं के बीच धिरे रहने के पर भी उन्होंने अपना सात्त्विक हिन्दू धर्मजीवन हृद रखा और अपने हौटे भाई कालकाप्रसाद के साथ मिलकर कथ्यकी ऊनति के लिए सौदेव प्रयत्नशील रहे। इनकी जोड़ी को 'राम-लक्ष्मण' की जोड़ी कहा जाता था।
- नेपाल के महाराज, भोपाल के नावाब व अन्य राजा राईसों ने इन्हें विपुल धन देकर सम्मानित किया था। इन्होंने उदासता पूर्वक शिक्षा देकर सुभोग्य शिष्य तैयार किए।
- आज कथ्यक वृत्त्य का जो भी स्वरूप हास्तिगोचर हो रहा है उसकी संस्थगना का बहुत बहुत छ्रेम इन्हीं को जाता है।
- मध्यली गत, मोहनी गत, सागर तरंगकर के लिए प्रसिद्ध थे।

## \* महाराज कालका प्रसाद :

- महाराज कालका प्रसाद बिन्दादीनजी के द्वारे भाई और उन्हीं के समाज प्रसिद्ध नर्तक थे। इनका व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक है।
- मेरे नृत्य के अतिरिक्त तबला व पखवाजा/वाद्य में भी अत्यन्त कुशल थे। इन्हें 'नवाब शामपुर' का आश्रय प्राप्त है।
- मेरे बहुत जिदी स्वभाव के थे और एक बार जो निश्चय कर लेते थे उसे पूरा कर दिखाते थे। कहा जाता है कि जिद में आने पर इन्होंने बिम्बन बी. नामक एक डेस्ट्रेशन तवामफ के नृत्य की शिक्षा प्रदान की जो बहुत मोटी, काली व धेचक के द्वाग वाली थी, किन्तु जब वह नाचती तब उसे उसके सारे दोष धुप जाते थे।
- ये अपने बड़े भाई बिन्दादीन का बहुत से सम्मान करते थे और सारे जीवन उनके साथ कथक नृत्य की उन्नति के लिए प्रभावी प्रभावशील रहे।
- इनकी मृत्यु सन् १९७० ई. के लगभग लम्बनक्षु में हुई।
- इनके तीन पुत्र थे - श्री अच्छन महाराज, श्री लद्धि महाराज व श्री रमभू महाराज, जो तीनों ही अपने समय के प्रसिद्ध नर्तक हुए हैं।

- \* महाराज हनुमान प्रसाद - महाराज हरिहर प्रसाद
- कथ्यक नृत्य के जयपुर घराने के प्रर्थम प्रवर्तीक भानुजी की पाँचवीं पीढ़ी में दुल्हाजी उर्फ गिरधारीजी हुए, जिनका नृत्य के तांडव और लास्य दोनों ही अंगों समान अधिकार था। इनके दो पुत्र हुए - हरिहर प्रसाद और हनुमान प्रसाद
- ये दोनों ही नृत्य कला में अत्यन्त प्रवीण थे और जयपुर महाराज के 'भुजीजन खाना' में नियुक्त थे। जिस समय जयपुर में इन दोनों आईयों इन दोनों भाईयों की जोड़ी प्रसिद्ध वे 'देव - लास्परी कोजोड़ी' के रूप में विख्यात रहे।
- हरिहर प्रसाद जी का नृत्य तांडव प्रदान था, इनकी आकाशचारी व और चक्रवर्ण परने प्रसिद्ध थे। ते ततकार भी इनी विद्युत गति से जाते थे कि इनके पैर जमीन के ऊपर ही नज़र आते थे।
- इनके विपरीत हनुमान प्रसाद जी का नृत्य लास्य और अंग प्रधान प्रधान अत्यन्त सुकोमल और भाव पूर्ण होता था। इनके विषय में एक किंवदन्ती प्रसिद्ध में रोजना जयपुर के गोविंद देव जी के मंदिर में सेवा करने के लिए जाते थे।
- इनके तीन पुत्र हुए - पंडित मोहनलाल, पंडित पिंजीलाल, संकित और पंडित नाशमण प्रसाद। ये तीनों ही कथ्यक नृत्य के उत्कृष्ट कलाकार और गुरु हुए।

→ अभिनय दर्पण के अनुसार एनडी प्रकार के शिरोभेद

मनुष्य के अंगों में सर्व प्रमुख होता है - सिर। सिर के शारिरिक महत्व से तो सब परिचित है। अभिभाव अभिनय की दृष्टि से भी इसका कम महत्व नहीं है। आचार्य नंदीके श्वर ने अपने अभिनय - दर्पण नामक ग्रंथ में भी नौ प्रकार के शिरोभेद अर्थात् सिर संचालन के प्रकार बताए हैं।

i) सम सिर :- जितो अधिक ऊचा और न अधिक नीचा, निश्चल सिर ही समसिर कहलाता है।

ii) उद्धाष्ट सिर :- ऊपर की ओर उठे हुए सर को उद्धाष्ट सिर कहते हैं।

iii) अधोमुख सिर :- निचे नीचे झुकेहुए सिर को अधोमुख सिर कहते हैं।

iv) आलोलीता सिर :- मण्डलाकर यानि गोलाई से घुमती हुई हुए सिर को आलोलीता कहते हैं।

v) धूता सिर :- बाँहें से दाढ़िनी और या दाढ़ से बाएँ और ओर चलता सिर धूता सिर कहलाता है।

vi) कम्पन कम्पिता सिर :- ऊपर व नीचे चलता हुआ सिर, कम्पिता सिर कहलाता है।

- vii) परावृत सिरः - पीछे की ओर और मुड़ा हुआ सिर परावृत है।
- viii) अत्क्षिप्त सिरः - सिर को एक ओर मोड़कर ऊपर उठाने को अत्क्षिप्त सिर कहते हैं।
- ix) परिवाहित सिरः - चंवर की तरह सिर को एक ओर से दुसरी ओर फुलने को परिवाहित सिर कहते हैं।

## 8) जयपुर तथा लखनऊ घराने की विशेषताएँ

क. लखनऊ घराना:

- लखनऊ घराना कवचक-कथ्यक नृत्य शैली का प्रमुख घराना है।
- इसमें प्रायः छोटे-छोटे तोड़े-टुकड़े नाचने का चलन है।
- टुकड़ों में अंगों की खूबसूरत बनावट पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
- और पैरों से बोलों की निकासी कम।
- इस घराने में नृत्य के बोलों के अतिरिक्त पश्चवाजा की परने और प्रिमलू के बोल भी नाचे जाते हैं।
- किन्तु कवित नाचने का प्रचार कम है।
- इस घराने में गत निकास का प्रस्तुति करने अधिक होता है, और गत भाव का कम।
- नुमरी गाकर भाव बताना इस घराने की विशेषता है, जिसके प्रचार का प्रमुख श्रेय महाराज बिन्दादीन का है।

ख. जयपुर घराना

- जयपुर घराने से तात्पर्य कथ्यक नृत्य की (जानकारी) शाजस्थानी परम्परा है।
- इसके नर्तक अधिकांशतः हिन्दू राजाओं के दरबारों से सम्बुद्ध रहे, अतः जहाँ एक और कथ्यक नृत्य की बहुत सी प्राचीन परम्पराएँ इस घराने में अब भी सुरक्षित हैं।
- अपने आश्रयदाताओं की काचि के अनुसार इसके नृत्य में जोश व तेजी-तथारी अधिक दिखाई

पढ़ती है।

- पखवाजा की मुश्किल तालों जैसे धामर, चौताल, कन्द्र, अष्टमगल, बह्मलक्ष्मी, गणेश, आदि में से अत्यन्त सुगमता से नाच लेते हैं।
- इसके द्वारा तत्कार में कठिन लम्फारियों का प्रदर्शन अत्यन्त प्रसिद्ध है।
- जितना ऐसे की सफाई पर ये दृश्योग ध्यान हेते हैं उतना हस्त पर नहीं।
- नृत्य के अलावा, कविता, प्रिमलू, तबला-धम्भना पखवाज के बोल, पक्षीपर्वन, जातिपर्वन आदि के विभिन्न प्रकार के बोलों का प्रयोग इस घराने की विशेषता है।
- आब प्रदर्शन में आत्मिकता रहती है और तुमरी के अपेक्षा अन्य या पदों पर आब दिखाए जाते हैं।

9) संत कवि सूरदास और मीरा बाई की जानकारी

→ संत कवि सूरदास

सूरदास कवियों में सर्वोपरि है। हिन्दी साहित्य में भगवान् श्रीकृष्ण के अनन्य उपासक और ब्रजभाषा के ऐष्ठ कवि महात्मा सूरदास के माने जाए हैं। इनका जन्म कनकता नामक ग्राम के १५४०ई. में पंडित रामदास जी के घर हुआ। वे जन्म से अंधे थे या नहीं इस संबंध में भी विद्वानों में मतभेद है।

प्रारंभ से सूरदास आगरा के समीप गऊघाट पर बहते थे। वहाँ उनकी भैं श्री वल्लभाचार्य से हुई और वे उनके शिष्य बन गए। वल्लभाचार्य ने उनको पुष्टिमार्ग में दीक्षित कर के कृष्णलीला के पद्ध गाने का आदेश दिया। सूरदास की मृत्यु गोवर्धन के निकट पारम्परी ग्राम के १५८०ई. में हुई।

→ मीरा बाई

मीरा बाई कृष्ण जी की परम भक्त थी। इनका जन्म सन् १५८८ई. में मेड़ता में दूधजी के छोरे पुत्र रतन सिंह के घर हुआ। ये बचपन से ही कृष्णभक्ति में बच्ची लेने लगी थीं।

मीरा का विवाह मेवाड़ के सिसोदिया राज परिवार में हुआ। उद्यपुर के महाराज शोजराज इनके पति थे जो मेवाड़ के महाराणा सागा के पुत्र थे। विवाह के कुछ समय बाद ही इनका देहान्त हो गया। पति के परलोकवास के बाद इनकी

भाकिस दिन - प्रतीक्षिण बढ़ती गई। ये मंदिरों में जाकर वहाँ मौजूद कृष्णभक्तों में नाचना और गाना सज-पर के सामने कृष्णाजी की मूर्ति के आगे नाचती रहती थीं। वह जहाँ जाती थीं, वहाँ लोगों का सम्मान मिलता। लोग उन्हे देवी जैसे प्यार और सम्मान देते थे। सन् १९७६०३ में मीरा बाई कृष्णाजी की मूर्ति में विलिन हो गई।

प्रतीक्षिण का विवरण निम्नानुसार है-

प्रतीक्षिण का विवरण निम्नानुसार है-

(१) यह एक छोटी सी गाड़ी है जिसमें बड़ी गाड़ी

की जगह एक छोटी गाड़ी है जिसमें बड़ी गाड़ी

की जगह एक छोटी गाड़ी है जिसमें बड़ी गाड़ी

की जगह एक छोटी गाड़ी है जिसमें बड़ी गाड़ी

की जगह एक छोटी गाड़ी है

प्रतीक्षिण का विवरण

प्रतीक्षिण का विवरण निम्नानुसार है-

## क्रिमात्मक [Portion]

→ तीनताल

- \* गुरुवंदृना
- \* ३ ठाठ [त्रिन अ तीन अलग pose] | मात्रा, ९, १३.
- \* २ आमदृ [साढ़ा + परनजुड़ी]
- \* ३ चक्करदार तोड़ - ४ आवर्तन
- \* ३ परन [त्रिस जाती-७]
- \* ३ चक्करदार परन
- \* दो कवित
- \* ३ गिनती की तीर्ति हाई
- \* तत्कार - आधी, बराबर, दुगुन, तिगुन, चौगुन, अठगुन  
करना तथा बाँट मा चलन का विस्तार करना

तीनताल में :-

- \* गतनिकास की विशेषता - सुमर (झुमर- घुमर, माथे की बिंदी जैसे माँग का गहना) कलाई
- \* मटकी उठाने के तीन प्रकार
- \* गतभाव - माखनचोरी
- \* अभिनयपक्ष में - एक आभिनय शीत

झपताल

- \* दो ठाठ
- \* १ परनजुड़ी आमदृ
- \* एक सलामी
- \* ३ साढे तोड़ [३ आवर्तन]
- \* २ चक्करदार तोड़
- \* २ परन
- \* २ चक्करदार परन
- \* १ कवित
- \* तत्कार का बराबर, दुगुन, चौगुन सहित

→ एकताल

- \* १ ठाठ
- \* एक आमदृ
- \* दो तोड़े
- \* १ चक्करदार → तोड़ा
- \* १ परन
- \* १ चक्करदार परन
- \* एक तिण्डि
- \* तत्कार की बराबर, दुगुन, चौमुन, तिण्डि सहित

तिण्डुव

ता थें थें तत आ थें थें तत सा थें थें तत  
 आ थें थें तत ता थें थें थें तत आ थें थें तत  
 ता थें थें तत आ थें थें थें तत ता थें थें तत  
 आ थें थें तत ता थें थें थें तत आ थें थें तत

(1, 2, 3)      (4, 5, 6)      (9, 8, 9)      (10, 11, 12)

(13, 14, 15)      (16, 1, 2)      (3, 4, 5)      (6, 7, 8)

(9, 10, 11)      (12, 13, 14)      (15, 16, 1)      (2, 3, 6)

(5, 6, 7)      (8, 9, 10)      (11, 12, 13)      (14, 15, 16)

## क्रियात्मक

मध्यमा प्रथम श्वर

० तीनताल

★ ता था-था आमद

।) साढा आमद

ता धा - धातिट धातिट धा

ता थैइ थैइ तत - आ थैइ थैइ तत - ता } x 3

ता थैइ थैइ तत - आ थैइ थैइ तत - ता }

ता थैइ थैइ तत - आ थैइ थैइ तत }

थैइ - ता थैइ - ता धा - ।

थैइ - ता थैइ - ता धा - 2

थैइ - ता थैइ - ता धा

X

२) परनजुडी आमद

धात क थुँगा - धागेधिने धा

धा धिला ता , धिला किटधा , तक्का थुँगा

तिटकत - धा , तिटकत गढिगन

ता थैइ - तत तत थैइ }

आ थैइ - तत तत थैइ }

थैइ - ता थैइ - ता थैइ }

थैइ थैइ तत तत }

slow

ता थैइ - थैइ तत तत थैइ - आ थैइ - थैइ तत तत थैइ }

थैइक थैइक - थैइ थैइ तत तत

। - तत तत - 2 - तत तत - 3 - तत तत - 4 - तत तत }

x 3  
fast

\* चक्रवर्ती तोडे [3]

१) थैर्ड क थैर्ड क तत

थैर्ड क थैर्ड क तत

ता थैर्ड थैर्ड तत - आ थैर्ड थैर्ड तत

तत ss तत ss

ता थैर्ड थैर्ड तत - आ थैर्ड थैर्ड तत

ता थैर्ड थैर्ड तत - आ थैर्ड थैर्ड तत कु-1

ता थैर्ड थैर्ड तत - आ थैर्ड थैर्ड तत

ता थैर्ड थैर्ड तत - आ थैर्ड थैर्ड तत - 2

तात्स थैर्ड थैर्ड तत - आ थैर्ड थैर्ड तत

ता थैर्ड थैर्ड तत - आ थैर्ड थैर्ड तत - कु 3 ]

} x 3

२) ता थैर्ड - नाम थैर्ड

तिरधा दिग दिग - थुं - थुं

थैर्ड ... ता थैर्ड ... ता थैर्ड थैर्ड तत तत

तिरधा दिग दिग - तिरधा दिग दिग - 1

तिरधा दिग दिग - तिरधा दिग दिग - 2

तिरधा दिग दिग - तिरधा दिग दिग - 3 ]

} x 3

३) ता थैर्ड - ता थैर्ड - तत तत थैर्ड

आ थैर्ड - आ थैर्ड - तत तत थैर्ड - ता -

तिट्क ति-ट-क-त - ग-दि-ग-न - धा

तिट्कत गदिगन - धा

तिट्कत गदिगत - थैर्ड - ता - थैर्ड

थैर्ड - ता - के थैर्ड - थैर्ड ता -

} x 3

### \* चक्रकरण पर्याय [3]

1) धातिट धातिट धाधातिट क्रधातिट  
 धुमकीट तक धुमकीट तक  
 गदीगन नगधेत गदीगन नगधेत }  
 धुमकीट ध धातिट धातिट } x 3  
 क्रधातिट क्रधातिट धेडत धेडत धेडत ता ॥  
 तिटकत गदीगन धाड ता धाड  
 तिटकत गदीगन धाड ता धाड  
 तिटकत गदीगन धाड ता धाड }

2) तिग्धा दिग दिग - तिग्धो दिग दिग औई }  
 तत तत त औई }  
 ता औई - कुकुध }  
 तिग्धा दिग दिग - तिग्धो दिग दिग } x 3  
 औई ता - औई औई ता औई - औई ता }

3) धिनक-धिनक धुमकिट  
 ता धा - ता धा - ता धा }  
 क्रकडधातिट धा }  
 तिटकत गदीगन - तकिट ता-धा } x 3  
 तकिट ता-धा }  
 तकिट ता-धा }

तिटकत गदीगन - तकिट ता-धा }  
 तकिट ता-धा }  
 तकिट ता-धा }

तिटकत गदीगन - तकिट ता-धा } x 3  
 तकिट ता-धा }  
 तकिट ता-धा }

★ कविता [2]

१) गण गण गणपती गजमुख मंडल  
गिर्द गिर्द गिर्द गिर्द गिर्द थुँन थुँन  
तत तत थेई

जय जगवंदन वक्रतुंड दानी द्वाता

विघ्न हरण शुभ करन सहायक  
धुमकीट धुमकीट

थड़कंग थड़कंग गदीगन थेई

थड़कंग थड़कंग गदीगन थेई

थड़कंग थड़कंग गदीगन अधा

२) कर मुख्लीधर अधर सुधाकर

मोर मुकुट धर पितांबर धर

पग धैंजेनिया बाजत है छवि

छुन ननन ननन बाजत धुँगर

तिरधा दिग दिग - तिरधो दिग दिग

छन ननन ननन बाजत धुँगर थेई - ता - थेई

तिरधा दिग दिग - तिरधो दिग दिग

छन ननन ननन थेई - ता - थेई

★ ३ गिनती की तिहाई

~~1234 12-12345678-123-12345678-~~

~~1234-1234-1234-1234-123~~

→ (7-7-5-5-3-3-1-1) 3 times

→ (12345-1234-123-12-1-1-1) 3 times

→ (12345678-1, 12345678-12, 12345678910/112131415161)

X 3 times

★ परन् - ३.

→ धांन धिक्किट्था - धिक्किट्था - धिक्किट्था - धिक्किट्था  
 तांन धिक्किट्था - धिक्किट्था - धिक्किट्था - धिक्किट्था  
 धांन धिक्किट्था ताथा - ताथा - ताथा - ताथा - ताथा  
 तांन धिक्किट्था ताथा - ताथा - ताथा - ताथा - ताथा  
 दिगी दिगी थैई - दिगी थैई - दिगी दिगी

<sup>1 - 2 - 3 - 4 - 5</sup>  
 दिगी दिगी थैई - दिगी दिगी थैई - दिगी दिगी

<sup>1 - 2 - 3 - 4 - 5</sup>  
 दिगी दिगी थैई - दिगी दिगी थैई - दिगी दिगी

<sup>1 - 2 - 3 - 4 - 5</sup>

→ धेत धेत - त्रक धेत - तगिडन धेडत्ताड  
 तगिडन धेडत्ताड  
 धेत धेत - त्रक धेत - अतगिडन धेडत्ताड  
 तगिडन धेडत्ताड

धेत धेत - ताडधेघे

धेत धेत - ताडधेघे

तिटकत गादिगन धाडधेघे

ता धा श्च ता धा - ता

तिटकत गादिगन धाडधेघे

ता धा ता धा - ता

तिटकत गादिगन धाडधेघे

ता धा ता धा - ता

(no pause)

→ त्रिस जाति की पर्शन-

धां न धा - धागेन धा

धागेन तागेन - धांन धा

धांन धा - धागेन धा

धागेन तागेन - धांन धा

धागेन तागेन - धा - ता - धा

धागेन तागेन - धा - ता - धा

धागेन तागेन - धा - ता - धा

~~धा~~

जब तिहाई हाथ में लगाए तीन ताल  
में तो :

2 आवर्तन में ( ॥ , ६ , । )

1 आवर्तन में ( ६ , ॥ , । )

तिहाई : ता थैर्द थैर्द तत - ता

ता थैर्द थैर्द तत - ता

ता थैर्द थैर्द तत - आ थैर्द थैर्द तत - थैर्दिता थैर्द

थैर्दिता थैर्द

2 ठाठ

१ मात्रा ता थैर्द तत आ थैर्द तत

ता थैर्द थैर्द तत आ थैर्द थैर्द तत - ।

ता थैर्द थैर्द तत आ थैर्द थैर्द तत - २

ता थैर्द थैर्द तत आ थैर्द थैर्द तत - धा

२४ मात्रा ता थैर्द थैर्द तत आ थैर्द थैर्द तत - ।

ता थैर्द थैर्द तत आ थैर्द थैर्द तत - २

ता थैर्द थैर्द तत आ थैर्द थैर्द तत - धा

० झपताल  
मात्रा - 10 , विभाग - 4 , ताली - 1, 3, 8 खाली - 6

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धी ना	धी धी ना	ती ना	धी धी ना						
x	2	0	3						

\* २ ठाठ

→ १ मात्रा से

ता थैई - तत तत - थैई तथा

आ थैई - तत तत - थैई तथा धी

→ ६ मात्रा से

धीं ना, धीं धीं ना,

ता थैई तत , आ थैई तत, तत तथा

\* ७ सलामी तोड़ा

ता थैई तत

आ थैई तत

तत तत - ता थैई थैई तत - आ थैई थैई तत

तत तत - 1 pause , तत तत - 2 pause , तत तत धी

## \* । परनंजुडी आमद

धातक थुंगा ५

धा गे दि ने धा ५

## धार्थिता

## धित्ता किट्ठा

धातक चुंगा, धागे दिने धा, धाधिंता ।

धिता क्रिट्ट्या, तकहा चुंगा ! - pause } fast  
तकहा चुंगा 2 pause, तकहा चुंगा - द्वि }

\* ३ साढे तोड़े

→ तत तत अर्धन ता - ता और और तत १  
ता और और तत - । ,  
आ और और तत - २  
ता और और तत -  
(ता और तत - आ और तत) off beat  
ता और और तत - आ और और तत - ।  
ता और और तत - आ और और तत - २  
ता और और तत - आ और और तत - धी

→ तत तत- ता थैइ थैइ तत - आ थैइ थैइ तत  
ता थैइ थैइ तत - आ थैइ थैइ तत  
तत तत - थैइ ता - थैइ - थैइ - थैइ  
थैइ - थैइ - थैइ

तत तत- ता थैइ थैइ तत - आ थैइ थैइ तत  
आ थैइ थैइ तत - आ थैइ थैइ तत

तत तत - थैइ ता  
थैइ - थैइ - थैइ

तत तत - ता थैर्ड थैर्ड तत - आ थैर्ड थैर्ड तत  
 ता थैर्ड थैर्ड तत - आ थैर्ड थैर्ड तत  
 तत तत - थैर्ड ता  
 थैर्ड - थैर्ड - धी

→ तत तत - थुँन थुँन - ता थैर्ड थैर्ड तत - आ थैर्ड थैर्ड तत  
 तत तत - थुँन थुँन - ता थैर्ड थैर्ड तत - आ थैर्ड थैर्ड तत  
 ता - थैर्ड - तत - आ - थैर्ड - तत

ता थैर्ड थैर्ड तत - । off beat  
 आ थैर्ड थैर्ड तत - 2  
 ता थैर्ड थैर्ड तत - ३  
 ता थैर्ड थैर्ड तत - ता s - धा d - ताधा x  
off beat

★ २ चक्रकरदार तोडे विलंभित

→ तत तत - ता थैर्ड थैर्ड तत - आ थैर्ड थैर्ड तत }  
 तिधा दिग दिग थैर्ड - ता (जप) } x 3  
 तिधा दिग दिग - । } Without  
 तिधा दिग दिग - 2 }  
 तिधा दिग दिग }  
 {

→ ता थुँगा - तकका थुँगा - तिधे ता - तकका थुँगा }  
 तिधे - ता - तकका थुँगा } x 3  
 तिधा - ता - तकका थुँगा }  
 दिग दिग थैर्ड ता - । }  
 दिग दिग थैर्ड ता - 2 }  
 दिग दिग थैर्ड ता }

## ~~★ अपराह्न महाय~~

→ श्व ता-धा-धागेन धा

ता-धा- धागेन धा

ता-धा-धागेब धा

धागेन स्थानेन धागेन तागेब तागेब - थुंन थुंन ना  
धागेन धागेन तागेन तागेन - थुंन थुंन ना

तृत तृत तृत तृत तृत तृत - ।

ଓই ওই ওই ওই ওই - ২

ନ ନ ନ ନ ନ ନ - ୩

तत् तत् थेइ थेइ थेइ - ।

तत तत थैई थैई थैई - २  
तत तत थैई थैई थैई - धी

→ त्रांग त्रांग कत, थैरु थैरु कत

धित धित कृत करत, भुंन भुंन करत

તિરધા દિગ દિગ થોડી, તિરધા દિગ દિગ થોડી

तिथा द्विग द्विग

ता- तथा-ता-१

ता - तथा - ता- २

तिरधा दिग् दिग् - तिरधो दिग् दिग्

## त्राण तथा

तिथा दिग दिग- तिथो दिग दिग

## त्रांग तथा

तिन्धा दिग दिग।- तिसो तिन्धो दिग दिग दी

ऋग्वेद

\* २ चक्रकरदार परन

→ तिथा दिग दिग - तिथो दिग दिग - थैर्ड )  
 तत तत - तत थैर्ड ता थैर्ड - कुकुध  
 तिथां दिग दिग - तिथो दिग दिग  
 थैर्ड ता थैर्ड थैर्ड - थैर्ड ता  
 तिथा दिग दिग - तिथो दिग दिग  
 थैर्ड ता थैर्ड - थैर्ड ता थैर्ड - थैर्ड ता  
 तिथा दिग दिग - तिथो दिग दिग  
 थैर्ड ता थैर्ड - थैर्ड ता थैर्ड थैर्ड ता

X 3

Without  
pause

→ धागेतिट धागेतिट कडधातिट धागेतिट  
 धागेतिट धागेतिट कडधातिट धागेतिट  
 धागेतिट धागेतिट धा-ता  
 धागेतिट धागेतिट धा- ता  
 धागेतिट धागेतिट धा॒

X 3.

\* १ कविता

दयाम सुंदर जमुना के तट पर

गोप गोपियों से रास स्वावत

कोई मालूत कोई बींग बजावत

कोई मृदंग द.. कोई नाच नचावत

ता थैर्ड या (कप) ता थैर्ड या , ता थैर्ड

धुमकिट धुमकिट - धाइ

धुमकिट धुमकिट - धाइ

धुमकिट धुमकिट - धी

\* तिहाई (3)

$$\rightarrow \underbrace{(12345678)}_{\text{slow}} - 1234 - 1234 - 1 \times 3$$

$$\rightarrow (1234 - 1 1234 - 1 12345678 - 1 - 1 - 1) \times 3$$

$$\rightarrow \underbrace{(12345, 1234, 123, 12)}_{\text{no space}} \underbrace{1 - 1 - 1}_{\text{slow}} \times 3$$

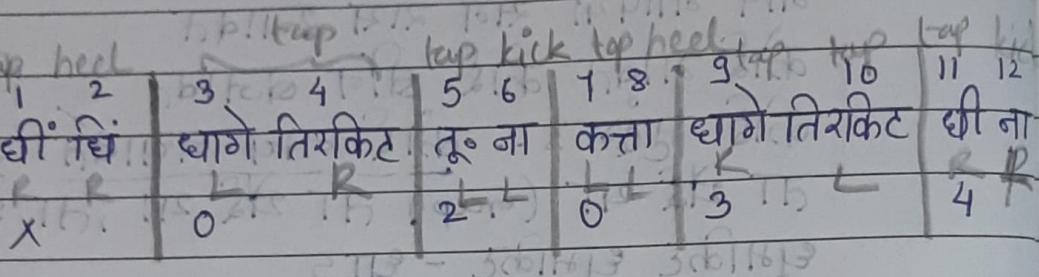
तिहाई लगाए ते

२ आर्वतन (११, १४)

$$\rightarrow \underbrace{(123 123 123 123)}_{\text{fast}} \underbrace{124 1234 - 1}_{\text{slow}} \times 3$$

## ० एकताल

मात्रा - १२ विज्ञाग ६ तली - १, ५, ७, ११ खाली - ३, ७



## \* आमद - १

ता थैइ तत - आ थैइ तत , ता थैइ तत- आ थैइ  
 थैइक थैइक थैइक थैइक तत तत  
 थैइक थैइक थैइक थैइक तत तत  
 थैइक थैइक थैइक थैइक तत तत

तत तत - ।

तत तत - २

तत तत - धीं

## \* २ साढे तोडे

→ तत तत थुँन थुँन (तिग्धा दिग दिग थैइ)  $\times 2$   
 तत तत थुँन थुँन (तिग्धा दिग दिग थैइ)  $\times 2$   
 ता थैइ - तत तत तत , आ थैइ - तत तत तत  
 तिग्धा दिग दिग तिग्धो दिग दिग  
 तिग्धा दिग दिग तिग्धो दिग दिग  
 तिग्धा दिग दिग तिग्धो दिग दिग - धा

→ ता थैर्ड थैर्ड तत - थैर्ड ss - थैर्ड ss - थैर्ड ss

आ थैर्ड थैर्ड तत - थैर्ड ss - थैर्ड ss - थैर्ड ss

ता थैर्ड थैर्ड तत - ता थैर्ड ता

आ थैर्ड थैर्ड तत - आ थैर्ड ता

तत - तत तत - थैर्ड - तत थैर्ड - तत थैर्ड

तत तत तत - थैर्ड - तत थैर्ड - तत थैर्ड

तत तत तत - थैर्ड - तत थैर्ड - तत थैर्ड

x

\* 2 चक्रकरण तोड़े

→ तत तत तत तत - ता थैर्ड थैर्ड तत - आ थैर्ड थैर्ड तत) \* 3

तिरधा दिग दिग - 1, तिरधा दिग दिग - 2

(तसीधा इ का चक्र) (उहरा इ का चक्र)

x 3

तिरधा दिग दिग - तिरधो दिग दिग - 1

तिरधा दिग दिग - तिरधो दिग दिग - 2

तिरधा दिग दिग - तिरधो दिग दिग

→ तत तत तिरधा तत

तिरधा दिग दिग

थैर्ड - ता थैर्ड - तत थैर्ड - ता

तिरधा दिग दिग - थैर्ड ता थैर्ड

तिरधा दिग दिग - थैर्ड ता थैर्ड

तिरधा दिग - थैर्ड ता थैर्ड

}

x 3

fast

\* । परन (विलंभित)

धागेतिट - धा क्रधातिट - धा

धागेतिट - धा क्रधातिट - धा

धागेतिट धागेतिट सो धागेतिट धागेतिट - धा - धा - धा

धागेतिट धागेतिट धागेतिट धागेतिट - धा - धा - धा

धागेतिट धागेतिट धागेतिट धागेतिट - धा - धा - धा - धा

\* । चक्करदार परन (मध्य लभ)

त्रांग त्रांग तकिट तकिट - धिकिट धिकिट

तकिट धिकिट - तकिट धिकिट - थुँन थुँन ना

(तकिट धिकिट)² - धा॒धि॒त॒धा॒, धा॒धि॒त॒धा॒ {slow  
OFF beat}

(तकिट धिकिट)² - धा॒धि॒त॒धा॒, धा॒धि॒त॒धा॒

(तकिट धिकिट)² - धा॒धि॒त॒धा॒, धा॒धि॒त॒धा॒

५. मात्रा ३० वाली - १६ वाली १३ वाली

धी धी धागे तिशकिट तू ना क सा

कत ता थैरै छत आ थैरै तत धी

। तिष्ठैरै

1234-1

1234-12

1234-123

1234-1234. धी